

Court No. - 8

Case :- MISC. SINGLE No. - 4004 of 2017

Petitioner :- Uma Shankar Jaiswal

Respondent :- Addl Distt & Sess.Judge II,AmbedkarNagar & Ors

Counsel for Petitioner :- Panna Lal Gupta, Rama Shankar Jaiswal

Hon'ble Rakesh Srivastava,J.

Heard learned counsel for the petitioner and the learned Standing Counsel.

This petition has been filed challenging the order dated 28.1.2017 passed by the Additional District and Sessions Judge, Ambedkar Nagar.

In the year 1996 one Ram Charitra had preferred Original Suit No.440 of 1996 (Ram Charitra v. Baid Raj). During the pendency of said suit the plaintiff and defendant died and in their places the petitioner - legal heir of the plaintiff and Smt. Vimla Devi - legal heir of defendant were substituted. On 27.4.2005, the Trial Court dismissed the above mentioned suit. Thereafter, the petitioner preferred Civil Appeal No.22 of 2005 (Uma Shankar v. Vimla Devi and others). During the pendency of the said appeal the petitioner on 11.11.2016 moved an application under Order 6 Rule 17 CPC before the Appellate Court for amending paragraphs 4-A and 4-B of the plaint. On 28.1.2017, the said application was dismissed by the Additional District and Sessions Judge, Ambedkar Nagar.

Learned counsel for the petitioner relying upon the decision in *State Bank of India and another v. M/S Emmsons International Ltd. and another, 2012 ACJ 43* has submitted that amendment can be allowed at the appellate stage, and as such, the court below has committed manifest error of law. Paragraphs 4 and 5 of the plaint as well as amendment sought to be made are reproduced below: -

"धारा 4 – यह कि दौरान मुकदमा मूल प्रतिवादी की भी मृत्यु हो गयी जिसके मृत्योपरान्त वर्तमान रेस्पाण्डेन्टस प्रति स्थापित हुए। प्रतिवादी रेस्पाण्डेन्टस ने अपना प्रतिवादपत्र प्रस्तुत करके वादी/अपीलांट के कथनों से इंकार करते हुए अभिकथन किया कि विवादित भूमि मूल प्रतिवाद वैद्यराज व कपिलराज को उनके भाइयों के बीच हुए बटवारे में मिरी घरे की भूमि है जिस पर प्रतिवादी वैद्यराज व उसके पूर्वज उठते बैठते जानवर बांधते गांज खरही पयाल रखते कोल्हू चलाते व गृहस्थी के अन्य कार्यों में जमींदारी विनाश के पूर्व से बराबर इस्तेमाल करते चले आ रहे हैं और बाद खात्मा जमींदारी वे विवादित भूमि के मालिक हो चुके हैं यद्यपि कि वादी ने कपिलराज को विवादित भूमि के पूरब स्थित आबादी की भूमि में कपिलराज को सबसे पूरब हिस्सा मिलसा कथित किया है।

धारा 5 — यह कि आगे प्रतिवादीगण ने यह भी कथन किया कि विवादित भूमि में प्रतिवादीगण की सरिया, भूसाघर कण्डाघर व छप्परपोश बैठका स्थित है तथा प्रतिवादीगण के दरख्तान 3 थाला कोठी वांस खजूद आदि नीबू गूलर अर्जुन पपीता आदि स्थित है जिसके फूल फल एवं लकड़ियों से वे बराबर लाभान्वित होते चले आ रहे हैं।"

amendment sought

धारा 4अ — यह कि मूल प्रतिवादी खेमराज व उनके पिता राम अचरज दूबे माजा भिदूण के प्राचीन निवासी नहीं रहे हैं बल्कि नाम अचरज दूबे मौजा मेढी परगना विडहर तहसील टाण्डा जनपद अम्बेडकरनगर के प्राचीन निवासी रहे हैं जिन्हें राम चरित्तर स्वयं मौजा भिदूण लाये थे और अपने घरे के पूर्वी अंश जो विवादित भूमि के पूरब रास्ते तक है, को राम अचरज दूबे को देकर उन्हें कब्जा व दखल दे दिया था जिस पर वादपत्र राम अचरज दूबे उनके सड़को में बंटवारा होने पर सबसे पूरब नवलराज, उनके पश्चिम कीपलराज और सबसे पश्चिम विवादित भूमि से सटा पूरब खेमराज को हिस्सा मिला जिस पर वे लोग अपने अपने हिस्से की भूमि को घेर पर निर्माण कर लिया है और उनके पश्चिम विवादित भूमि जहां वादी की मिल्कियत है और वादी के कब्जे में है।

धारा 4ब — यह कि प्रतिवादीगण में कमीशन जाने के पूर्व जबरदस्ती कब्जा करने की नीयत से एक छप्पर अपनी जमीन में रखते हुए विवादित भूमि में भी बढ़ाकर जमीनपर रख लिया था यह छप्पर जमीन पर पड़े पड़े सड़ कर टूट गया और समाप्त हो गया। इस प्रकार विवादित भूमि में अब छप्पर का कोई अंश मौजूद नहीं है और विवादित भूमि के किसी अंश पर प्रतिवादीगण का कब्जा भी नहीं है बल्कि सम्पूर्ण विवादित भूमि वादी की मिल्कियत है और वादी के कब्जे में है।"

Order 6 Rule 17 CPC is quoted below: -

"17. Amendment of pleadings.- The Court may at any stage of the proceedings allow either party to alter or amend his pleadings in such manner and on such terms as may be just, and all such amendments shall be made as may be necessary for the purpose of determining the real question in controversy between the parties.

Provided that no application for amendment shall be allowed after the trial has commenced, unless the Court comes to the conclusion that in spite of due diligence, the party could not have raised the matter before the commencement of trial."

A perusal of proviso to Rule 17 would show that after the trial is commenced no application for amendment is to be allowed unless the plaintiff is able to show that the amendment sought to be made was not in his knowledge in spite of due diligence. It is not in dispute that the facts now sought to be

incorporated in the plaint were in the knowledge of the petitioner prior to framing of issues. Since the petitioner has not been able to show that the facts were not within his knowledge before commencement of trial, the application could not be allowed.

In the circumstances, the petition, being devoid of merit, is dismissed.

However, it is made clear that the observation made by this Court as well as by the appellate court regarding possession shall not be taken into consideration by the Appellate Court while deciding the appeal preferred by the petitioner on merits.

Order Date :- 28.2.2017

Anupam